+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

YOJANA MAGAZINE ANALYSIS

(योजना पत्रिका विश्लेषण)

(स्वच्छ भारत मिशन के 10 वर्ष)

(October 2024)

(Part II)

TOPICS TO BE COVERED

- स्व-अभ्यास के माध्यम से स्वच्छता के संबंध में गांधीजी का दर्शन
- स्वच्छता क्रांति: भारत को खुले में शौच से मुक्त करना एक महत्वपूर्ण उपलब्धि
- गंगा पुनरुद्धार और जल संरक्षण

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

स्वच्छता के संबंध में गांधीजी का दर्शन:

गांधीजी पर उनके परिवार का प्रभाव:

- स्वच्छता गांधीजी का जुनून था। साफ-सफाई और स्वच्छता, व्यक्ति और समाज के लिए, मनुष्य का आवश्यक गुण माना जाता है। लेकिन विभिन्न कारणों से, बड़े पैमाने पर लोग इसे गंभीरता से नहीं ले रहे हैं और स्वयं को असुरक्षित बना रहे हैं। गांधीजी ने उल्लेख किया कि "हर किसी को अपना सफाईकर्मी स्वयं होना चाहिए"।

- जब गांधीजी छोटे थे तो अगर वे कभी इस सफाई कर्मी के बेटे 'उका' को छू लेते, तो उनकी मां पुतलीबाई उन्हें नहलाती थीं। गांधी ने इसका विरोध किया और अपनी माँ से बहस की "आपने ही तो कहा था कि भगवान राम सबके दिल में रहते हैं। अगर ऐसा है तो राम उका के दिल में भी रहते होंगे। फिर आप कैसे कह सकती हैं कि वह 'अछूत' है और उसे छूने से अपवित्रता होगी?"

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

दक्षिण अफ्रीका का अनुभव:

- अपने आप को और अपने पर्यावरण को स्वच्छ और स्वास्थ्यकर रखने की आवश्यकता गांधीजी के मन में तब आई जब उन्होंने दक्षिण अफ्रीका में नस्लीय पूर्वाग्रह का सामना किया। जब उन्होंने उन स्थानों का दौरा किया जहां भारतीय रहते थे और वहां उन्होंने उन्हें समझाया कि वे अपने घर और उसके आसपास की स्वच्छता की स्थितियों में सुधार करें। उन्होंने ऐसे कुछ मूल्यों पर जोर दिया जिन्हें दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों को अपने जीवन में अपनाना चाहिए जिनमे से एक है: स्वच्छता व्यक्तिगत स्वच्छता और आस-पास के क्षेत्र में स्वच्छता।
- वर्ष 1901 में दक्षिण अफ्रीका से गांधीजी की दूसरी भारत यात्रा के दौरान, उन्होंने कलकत्ता में कांग्रेस के अधिवेशन में भाग लिया। कांग्रेस शिविर की स्वच्छता की स्थिति भयानक थी। कुछ प्रतिनिधियों ने अपने कमरे के सामने बरामदे का इस्तेमाल शौचालय के रूप में किया जबकि अन्यों ने इस पर कोई आपत्ति नहीं जताई। दक्षिण अफ्रीका में अपने स्वयं के अनुभव से, गांधीजी ने तुरंत प्रतिक्रिया व्यक्त की अपने आस-पास के वातावरण को साफ रखने के लिए कहा।

- जब उन्होंने स्वयंसेवकों से बात की, तो उन्होंने कहा, "यह हमारा काम नहीं है; यह सफाई कर्मचारी का काम है"। गांधीजी ने किसी के आने और उन्हें सहयोग करने का इंतज़ार नहीं किया। उन्होंने झाड़ू ली और गंदगी साफ कर दी।

भारत में प्रारंभिक अनुभव:

- दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों के लिए समानता और आत्म-सम्मान के संघर्ष के बाद, गांधीजी 1915 में फिनिक्स सेटलमेंट के अपने साथियों के साथ भारत लौटे। स्वामी श्रद्धानन्द के सादर निमंत्रण पर, वे हरिद्वार गए। वहां पर वे तथा उनके फिनिक्स साथी लड़के सफाई कर्मी के रूप में काम करते थे।
- दलितों के बीच काम करने वाले अमृतलाल वी ठक्कर ने गांधीजी को एक अनुरोध भेजा कि वे आश्रम में एक अछूत परिवार को रहने का स्थान दे सकते हैं। गांधीजी ने स्वीकार कर लिया।
- इसका उनकी रलियतबहन, पत्नी कस्तूरबा और करीबी रिश्तेदारों ने विरोध किया। गांधीजी ने स्पष्ट रूप से घोषणा की कि जो कोई भी इस बात का विरोध करता है, वह आश्रम छोड़ सकता है। उनकी एकमात्र बहन, रलियतबहन ने आश्रम छोड़ दिया। इस अछूत जोड़े को आश्रम में प्रवेश दिलाने के कारण उनके समर्थकों ने

उनका सामाजिक बहिष्कार कर दिया था। गांधी जी इसलिए दृढ़ थे, क्योंकि वे अस्पृश्यता की मानसिकता को लोगों के मन से मिटाना चाहते थे।

मैला ढोना की प्रथा और अस्पृश्यता:

- लोगों को अछूत क्यों माना जाता है? क्योंकि वे मैला ढोने का काम करते हैं और समाज में अन्य निषिद्ध काम करते हैं। हमारे दोनों हाथों के इस्तेमाल के बारे में हमारी मानसिकता को देखना भी काफी दिलचस्प है। आम तौर पर, हम उपहार लेने और देने या कोई अन्य शुभ कार्य करने के लिए बाएं हाथ का उपयोग करने से बचते हैं। हम अपने बाएं हाथ को 'दूषित' मानते हैं। क्यों? हम आम तौर पर भारतीय संदर्भ में 'सफाई' के लिए बाएं हाथ का उपयोग कर रहे हैं।
- गांधी जी लोगों के दिमाग से अस्पृश्यता के इस सामाजिक कलंक को मिटाना चाहते थे। गांधीजी के लिए, दोनों हाथ बराबर थे और उन्होंने हर काम के लिए दोनों हाथों का इस्तेमाल किया।
- गांधीजी के करीबी सहयोगी विनोबा भावे तथाकथित 'उच्च' जाति से थे और आश्रम में दो काम करते थे। यह उनका नियमित कर्तव्य था और वे उन दोनों कामों को अत्यंत सावधानी और श्रद्धा के साथ करते थे: गीता पर चर्चा और शौचालय साफ करना।

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

स्वच्छता को लेकर पूरब को पश्चिम में सीख:

- गांधीजी के अनुसार उन्होंने पश्चिम से सीखा था कि शौचालय को ड्राइंग रूम जितना ही साफ होना चाहिए। उनका मानना था कि शौचालयों में सफाई के बारे में कई नियम, पूरब की तुलना में पश्चिम में अधिक सावधानी से पालन किए जाते हैं।
- जबकि कई बीमारियों का कारण हमारे शौचालयों की स्थिति और मल को कहीं भी और हर जगह फेंकने की हमारी बुरी आदत है।
- गांधीजी नेचर कॉल के लिए एक साफ जगह और उस समय इस्तेमाल के लिए साफ वस्तुओं की पूर्ण आवश्यकता में विश्वास करते थे। यह आदत उनमें इतनी पक्की हो गई है कि अगर वह उसे बदलना भी चाहे तो मैं ऐसा नहीं कर पाए और न ही वे इसे बदलना चाहता थे।

नमक मार्च के दौरान सीख:

- नमर्क मार्च के दौरान सभी यात्रियों और स्वयंसेवकों को एक स्थायी निर्देश दिया गया था। नमक मार्च के दौरान हर किसी को एक छड़ी ले जानी होगी। उन्हें शौचालय के रूप में उपयोग के लिए एक छोटा गड्ढा खोदने और फिर उसे उसी मिट्टी से बंद करने का निर्देश दिया गया था।

- उन्होंने गांव के लोगों को स्वच्छता की आवश्यकता, अपने यार्ड को साफ रखने, कूड़े को इधर-उधर उड़ने के लिए छोड़ने के बजाय इसे मिट्टी में दबाने के बारे में बात की। गांधीजी ने कहा, "जब तक आप झाड़ और बाल्टी अपने हाथों में नहीं लेते तब तक आप अपने कस्बों और शहरों को साफ नहीं कर सकते"।
- छात्रों को उनकी सलाह थी, "यदि आप स्वयं सफाईकर्मी बन जाते हैं तो आप अपने आस-पास के वातावरण को साफ कर सकते हैं"।

समाज का पुनर्निर्माण:

- हालांकि गांधीजी ने स्वतंत्रता संग्राम का नेतृत्व किया लेकिन उनके मन में हमेशा समाज के पुनर्निर्माण के बारे में विचार रहता था।
- उनका मानना था स्वतंत्रता को अधिक स्थायी और सार्थक बनाने के लिए, भारतीय सामाजिक, धार्मिक और आर्थिक संरचनाओं में कुछ कमियां हैं, जिन्हें ठीक करने और मजबूत करने की आवश्यकता है।
- इसलिए, उन्होंने सत्याग्रह के साथ-साथ भारतीय समाज के पुनर्निर्माण के लिए 18 सूत्रीय रचनात्मक कार्यक्रम प्रस्तुत किए। 18 बिंदुओं में से दो बिंदु स्वच्छता से संबंधित थे: गांव की सफाई और स्वास्थ्य एवं स्वच्छता का ज्ञान।

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

स्वच्छता क्रांति: भारत को खुले में शौच से मुक्त करना एक महत्वपूर्ण उपलब्धि

परिचय:

- 2 अक्टूबर, 2024 को भारत ने देश को खुले में शौच की बुराई से आजाद बनाने के लिए एक क्रांतिकारी मिशन, स्वच्छ भारत मिशन का एक दशक पूरा कर लिया।
- इस मिशन का मकसद खुले में शौच की समस्या को देश से मिटाना और ठोस कचरा प्रबंधन में सुधार लाना है। मिशन के शुरू होने से अब तक भारत ने इस समस्या को मिटाने में तेज प्रगति की है। साथ ही जल, स्वच्छता और आरोग्य में भी उल्लेखनीय सुधार आया है। स्वच्छ भारत मिशन से शौचालयों तक पहुंच और उनके इस्तेमाल के संबंध में करोड़ों देशवासियों के बर्ताव में परिवर्तन आया है। वर्ष 2014 से अब तक लगभग 50 करोड़ लोगों ने खुले में शौच करना बंद कर दिया है।

- दुनिया में सबसे ज्यादा लोग खुले में शौच करने वाली आबादी भारत में थी लेकिन इस उल्लेखनीय उपलब्धि ने वैश्विक स्वच्छता परिदृश्य पर भारत की स्थिति बदल कर रख दी।

संयुक्त राष्ट्र की स्वच्छता और साफ सफाई की चिंता:

- 2015 में, संयुक्त राष्ट्र महासभा ने 2030 तक पूरे किए जाने वाले 17 संवहनीय विकास लक्ष्यों (SDG) की घोषणा की। इन लक्ष्यों में से एक, SDG-6 में, वैश्विक समुदाय से 'सभी के लिए पेयजल और स्वच्छता उपलब्ध कराना और उनका स्थायी प्रबंधन सुनिश्चित किया गया था। प्रमुख चिंता विकासशील देशों में (ग्लोबल साउथ) में खुले में शौच (OD) करने की प्रथा को समाप्त करना था।
- खुले में शौच की वजह से अशोधित गंदगी या मल पूरे वातावरण में फैल जाता है और इससे स्वास्थ्य पर कई तरह के नकारात्मक असर पड़ते हैं, डायरिया संबंधी बीमारियां, ट्रेकोमा और मल संदूषण से गहराई से जुड़े हुए हैं।
- उल्लेखनीय है कि मल में पाए जाने वाले बैक्टीरिया के संपर्क में आने से विकास अवरुद्ध हो जाता है, जिससे बच्चों में बौनापन (Stunting) का खतरा रहता है। इस प्रकार स्वास्थ्य पेशेवरों के बीच व्यापक सहमति है कि पर्याप्त स्वच्छता और साफ सफाई स्वास्थ्य के प्रमुख निर्धारक हैं।

स्वच्छ भारत मिशन ग्रामीण की उपलब्धियां:

- सरकारी रिपोर्टों के अनुसार, भारत में स्वच्छता कवरेज 2014 में 39 प्रतिशत से बढ़कर 2019 में 100 प्रतिशत हो गई है।
- विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार स्वच्छ भारत मिशन के प्रथम चरण का प्रभाव बहुत उत्साहवर्धक रहा। 2014 की तुलना में 2019 में डायरिया से 3 लाख मौतें कम हुई।
- इसके तहत महिलाओं को सुरक्षा और गरिमा को सुनिश्चित किया गया।
- स्वच्छ भारत मिशन ने कई परिवारों के पैसे भी बचाए हैं। खुले में शौच मुक्त (ODF) गांव में एक परिवार द्वारा बीमार पड़ने के कारण हर साल औसतन 50,000 रुपये की बचत की गई। इससे पर्यावरण को भी बचाया गया क्योंकि ODF गांवों में मनुष्यों द्वारा दूषित भूजल की संभावना 12.70 गुना कम हो गई।

स्वच्छ भारत मिशन II चरण:

- स्वच्छ भारत मिशन के तहत हासिल की गई उपलब्धियों से उत्साहित का दूसरा चरण शुरू किया। अब ठोस और तरल अपशिष्ट प्रबंधन को बढ़ावा देकर और पहले चरण में जिन घरों को शामिल नहीं किया जा सका था उन्हें कवर करके उपलब्धियों पर ध्यान केंद्रित किया जा रहा है।

- सरकार का लक्ष्य अब 2024-25 तक भारत को ODF से ODF+ में बदलना है। पेयजल एवं स्वच्छता विभाग की नवीनतम रिपोर्ट के अनुसार, भारत ने स्वच्छ भारत मिशन ग्रामीण के तहत एक और बड़ी उपलब्धि हासिल की है, जिसमें देश के कुल गांवों में से आधे यानी 50 प्रतिशत गांवों ने मिशन के दूसरे चरण के तहत ODF+ का दर्जा हासिल कर लिया है।
- ODF+ गांव वह है जिसने ठोस या तरल अपशिष्ट प्रबंधन प्रणालियों को लागू करने के साथ-साथ खुले में शौच मुक्त की स्थिति को बनाए रखा है।

स्वच्छ भारत मिशन - शहरी (SBM-U):

- स्वच्छ भारत मिशन-ग्रामीण के साथ-साथ सरकार ने स्वच्छ भारत मिशन-शहरी (SBM-U) भी शुरू किया है, जिसका उद्देश्य भारत के शहरों को खुले में शौच से मुक्त बनाना और देश के 4,041 वैधानिक शहरों में नगर पालिका द्वारा ठोस अपशिष्ट का वैज्ञानिक तरीके से शत प्रतिशत प्रबंधन करना है।

स्वच्छ भारत मिशन-शहरी 2.0:

- स्वच्छ भारत मिशन-शहरी का दूसरा चरण 1 अक्टूबर, 2021 को 5 वर्षों की अवधि के लिए शुरू किया गया था। स्वच्छ भारत मिशन-शहरी 2.0 का लक्ष्य 2026 तक सभी शहरों को 'कचरा मुक्त' बनाना है।

- इस मिशन ने शहरी भारत में स्वच्छता के क्षेत्र में क्रांति ला दी है, जिससे शत प्रतिशत लोगों को स्वच्छता सुविधाएं मिल रहीं हैं।
- स्वच्छ भारत मिशन - शहरी के तहत 70 लाख से अधिक घरेलू सामुदायिक और सार्वजनिक शौचालय बनाए गए हैं, जिससे सभी के लिए सुरक्षित और सम्मानजनक स्वच्छता सुविधाएं उपलब्ध हो सके।
- गूगल मैप्स पर SBM शौचालय जैसे डिजिटल नवाचार के माध्यम से स्वच्छता सुविधाओं तक पहुंच में और सुधार किया गया है, जहां 3,300 से अधिक शहरों में 65,000 से अधिक सार्वजनिक शौचालयों को ठीक किया गया है।

स्वच्छ भारत मिशन - शहरी की उपलब्धियां:

- आवास और शहरी मामलों के मंत्रालय के आंकड़ों के अनुसार, शहरी भारत को 2019 में खुले में शौच मुक्त घोषित किया गया था, जिसके बाद मिशन के जरिये शहरी भारत को स्थायी स्वच्छता के मार्ग पर आगे बढ़ाया है, जिसमें 3,300 से अधिक शहरों और 960 से अधिक शहरों को क्रमशः ODF+ और ODF++ प्रमाणित किया गया है।
- शहर वाटर प्रोटोकॉल के तहत वॉटर+ प्रमाणन को दिशा में आगे बढ़ रहे हैं, जो अपशिष्ट जल के उपचार और इसके अधिकतम पुनः उपयोग पर केंद्रित है।

- वैज्ञानिक अपशिष्ट प्रबंधन के क्षेत्र में, भारत में अपशिष्ट प्रसंस्करण 2014 में 18 प्रतिशत था जो अब चार गुना बढ़कर 70 प्रतिशत हो गया है।
- इसमें 97 प्रतिशत वार्डों में घर-घर जाकर कचरा इकट्ठा करने और 85 प्रतिशत वार्डों में कचरा देने के स्थानों पर ही नागरिकों द्वारा कचरे को अलग किये जाने से सहायता मिली है।
- आवास और शहरी मामलों के मंत्रालय के अनुसार, कार्यक्रम में 20 करोड़ नागरिकों (भारत की शहरी आबादी का 50 प्रतिशत से अधिक) की सक्रिय भागीदारी ने बड़े पैमाने पर सूचना, शिक्षा और प्रसार तथा व्यवहार परिवर्तन जैसे अभियानों के माध्यम से सिशन को सुफलतापूर्वक एक सच्चे जन आंदोलन में बदल दिया है।

भारत में स्वच्छता को लेकर कुछ चुनौतियां:

- यद्यपि भारत सरकार ने यूनिसेफ के साथ मिलकर जनवरी 2020 तक खुले में शौच मुक्त लक्ष्य हासिल करने में महत्वपूर्ण प्रगति की है। हालांकि देश के कई हिस्सों से वापिस खुले में शौच की स्थिति वाली कुछ रिपोर्टें भी आई हैं।
- 2023 में, विश्व स्वास्थ्य संगठन और यूनिसेफ ने 2000 से 2022 तक वैश्विक स्तर पर घरों में जल आपूर्ति, साफ सफाई और आरोग्यता की स्थिति पर एक संयुक्त निगरानी कार्यक्रम की रिपोर्ट जारी की है। इस रिपोर्ट के अनुसार, 2022 में **भारत में ग्रामीण आबादी का 17 प्रतिशत हिस्सा अभी भी खुले में शौच करता है।**

- एक अन्य रिपोर्ट के अनुसार, भीड़भाड़ वाले **शहरी इलाकों में लगभग सात प्रतिशत लोग खुले में शौच करते हैं।**

आगे की राह:

- शौचालय के उपयोग को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण प्रगति हुई है, लेकिन खुले में शौच की प्रवृत्ति अभी भी चिंता का विषय बनी हुई है। लोगों के व्यवहार में बदलाव को मापने और निश्चित रूप से ODF स्थिति का पता लगाने के लिए मात्रात्मक मापदंड आवश्यक है। क्योंकि खुले में शौच की स्थिति रहना सार्वजनिक स्वास्थ्य के लिए काफी खतरनाक है, इस प्रथा को पूरी तरह से खत्म करने के लिए निरंतर प्रयासों की आवश्यकता पर जोर दिया जा रहा है।
- स्वच्छ भारत मिशन की सफलता को ध्यान में रखते हुए, स्वच्छता सेवाओं में न्यायसंगतता और संवहनीयता सुनिश्चित करने और किसी भी व्यक्ति को इन सुविधाओं से वंचित न रखने की आवश्यकता है।
- यह जरूरी है कि एक बार किसी गांव या क्षेत्र को खुले में शौच से मुक्त घोषित कर देने के बाद भी निरंतर उस पर निगरानी रखी जाए, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि जिन परिवारों ने शौचालय के उपयोग के सामाजिक मानदंड को - अपनाया है, वे खुले में शौच की अपनी पुरानी प्रथा को फिर से न शुरू कर दें।

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

गंगा पुनरुद्धार और जल संरक्षण:

गंगा: सांस्कृतिक और आध्यात्मिक भारत की धुरी और भारत की रक्षक

- गंगा केवल नदी ही नहीं है अपितु भारत की संस्कृति और सभ्यता की प्रतीक भी है। देश के 40 प्रतिशत लोगों को इससे जीने का सहारा मिलता है। यह भारत की जीवन-रेखा होने के साथ ही अध्यात्म का भी मूल स्रोत है।
- पश्चिमी हिमालय में गंगोत्री से निकलकर 2,525 किलोमीटर लम्बी गंगा नदी बंगाल की खाड़ी में समाहित होती है।

- हरिद्वार और प्रयागराज में हर 12 वर्ष बाद आयोजित होने वाले कुंभ मेले में विश्वभर के श्रद्धालु पहुंचते हैं। हिन्दुओं की मान्यता है कि गंगा में स्नान करने से सभी पाप धुल जाते हैं तथा मुक्ति अथवा मोक्ष की प्राप्ति होती है।
- गंगाजल में घुलनशील ऑक्सीजन सर्वाधिक मात्रा में होती है जिससे गंगा के पानी में यह अद्भुत गुण है कि यह पानी कभी खराब नहीं होता है।
- गंगा नदी का बेसिन भारत के GDP में 40 प्रतिशत से ज्यादा का योगदान करता है और इससे देश के कुल सतही जल में से एक-तिहाई मात्रा इसी से प्राप्त होती है।

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

गंगा खतरे में क्यों है?

- इस समय गंगा नदी जबरदस्त प्रदूषण, कम होती जैव-विविधता और पर्यावरण खतरों से घिरी है, जिससे इसके दीर्घावधि अस्तित्व पर खतरा मंडराने लगा है।
- गंगा तट के दोनों ओर औद्योगीकरण के कारण नदी के पानी की गुणवत्ता काफी गिरी है। नदी के तटों के आसपास सीवेज का निरन्तर छोड़े जाना, औद्योगिक और ठोस कचरे की मात्रा का बहुत तेजी से बढ़ना तथा गंगा किनारे के इलाकों में जोरदार मानवीय और आर्थिक गतिविधियां इसके प्रदूषण के मुख्य कारक हैं। अपर्याप्त बुनियादी सुविधाओं, पर्यावरण का खराब प्रबंधन और सीमित तकनीकी विशेषज्ञता तथा पाश्चात्य विकास मॉडल अपनाने से गंगा के पानी की शुद्धता और कम हो गई।

गंगा कार्य योजना (1986):

- भारत सरकार ने 1986 में गंगा कार्य योजना शुरू की थी, इसका मुख्य उद्देश्य गंगा नदी का प्रदूषण कम करना और गंगा के पानी की गुणवत्ता सुधारना था। यह योजना अनुपचारित और औद्योगिक अपशिष्ट जल और धार्मिक कृत्यों में प्रवाहित होने वाली सामग्री के कारण गंगा का प्रदूषण बढ़ने की शिकायतों को देखते हुए तत्कालीन प्रधानमंत्री राजीव गांधी के नेतृत्व में शुरू की गई थी।

- इस योजना का उद्देश्य सीवेज उपचार संयंत्र स्थापित करना, सैनिटेशन अर्थात साफ-सफाई के बुनियादी ढांचे में सुधार लाना और तरल कचरे पर अंकुश लगाना था।
- हालांकि इस योजना के लक्ष्य काफी महत्वाकांक्षी थे परन्तु सीवेज उपचार की पर्याप्त सुविधाएं न होना, वित्तीय साधन अपर्याप्त होना, और अधिकारियों के बीच सामंजस्य का अभाव जैसी चुनौतियों की वजह से योजना की सफलता काफी कम रह गई। योजना में दीर्घावधि के हिसाब से दूरदृष्टिता नहीं बरती गई और टिकाऊ उपायों की बजाय तात्कालिक सुधारों से काम चलाया गया तथा जनजागरण पर जोर नहीं दिया गया और सामुदायिक सहयोग जुटाने के भी प्रयास नहीं किए गए।

नमामि गंगे कार्यक्रम (राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन):

- भारत सरकार ने 2014 में ही 'नमामि गंगे' मिशन शुरू कर दिया था जिसका उद्देश्य था गंगा का पुनरुद्धार करना। इस कार्यक्रम का लक्ष्य गंगा नदी बेसिन का टिकाऊ विकास करना है। केन्द्रीय मंत्रिमंडल द्वारा स्वीकृत इस कार्ययोजना का बजट चार गुणा बढ़ा दिया गया था और यह केंद्रीय क्षेत्र की योजना बन गई।

- गंगा का प्रदूषण रोकने और गंगा बेसिन का पुनरुद्धार करने के उद्देश्य से सरकार ने 2016 में राष्ट्रीय गंगा नदी परिषद (पुनरुद्धार, संरक्षण और प्रबंधन) की स्थापना की।
- **नमामि गंगे कार्यक्रम के मुख्य स्तंभ:**
  - ➢ सीवरेज उपचार अवसंरचना
  - ➢ नदी सतह की सफाई
  - ➢ नदी-तट विकास
  - ➢ जैव विविधता
  - ➢ वनीकरण
  - ➢ जन जागरण
  - ➢ औद्योगिक अपशिष्ट निगरानी
  - ➢ गंगा ग्राम
- 2015 से 2021 के बीच अनुपचारित सीवेज के खतरनाक असर को कम करने के उद्देश्य से 815 नए सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट (सीवेज उपचार संयंत्र) लगाए गए या लगाने का प्रस्ताव लाया गया। गंगा विचार मंच और गंगा प्रहरी जैसे सामुदायिक मंच स्थानीय लोगों के साथ सहयोग को बढ़ाने की भूमिका निभाते हैं।

नमामि गंगे कार्यक्रम की उपलब्धियां:

- नमामि गंगे कार्यक्रम ने अनेक बड़ी सफलताएं प्राप्त की हैं जिनमें 31,810 करोड़ रुपये की 200 सीवरेज परियोजनाओं के लिए स्वीकृति शामिल है और इनमें से 116 परियोजाएं सफलतापूर्वक लागू को जा चुकी है।
- इस कार्यक्रम के तहत रिवर फ्रंट (नदी तट) विकास, तैरते ठोस कचरे को इकट्ठा करके उसका निपटान करना और गंगा नदी के इकोसिस्टम में स्वदेशी और लुप्तप्राय जीवों को फिर से पुनः स्थापित करना जैसे प्रयासों पर खास ध्यान दिया जा रहा है।
- भारतीय वन्यप्राणी संस्थान, केंद्रीय अंतर्देशीय मछली पालन अनुसंधान संस्थान और उत्तर प्रदेश राज्य वन विभाग मिलकर जल-प्राणियों को नस्लों के संरक्षण की परियोजनाओं पर काम कर रहे हैं।
- वन अनुसंधान संस्थान ने वनोत्पादन और जैव विविधता को बढ़ावा देने के उद्देश्य से वृक्षारोपण गतिविधियों की व्यापक परियोजना रिपोर्ट तैयार की है।
- इस कार्यक्रम के तहत जनजागरण के प्रयास, उद्योगों के तरल कचरे के प्रबंधन और गंगा नदी निकासी व्यवस्था के आसपास की ग्राम पंचायतें बनाने पर भी ध्यान दिया जा रहा है।

गंगा पुनरुद्धार के लिए और अधिक प्रयास की आवश्यकता:

- भारत के नियंत्रक और महालेखाकार (सीएजी) को 2017 की रिपोर्ट में नमामि गंगे परियोजना के वित्तीय प्रबंधन योजना क्रियान्वयन और मॉनिटरिंग की बड़ी खामियों को चिह्नित किया गया था। इन मुद्दों की वजह से ही इस कार्यक्रम के लक्ष्यों को प्राप्त करने में देरी हुई है।

गंगा में जल के प्रवाह की अनियमितता से जुड़ी चुनौती:

- देश में कुल वर्षा का 80 प्रतिशत तो जून से सितम्बर के बीच होती है जिससे दो बड़ी चुनौतियां सामने आती है। मानसून के दौरान उपचार संयंत्रों में सीवेज और बरसात के पानी का ओवरफ्लो (अत्यधिक प्रवाह) रहता है जिसके अनुपात में संयंत्रों की प्रोसेसिंग क्षमता कम पड़ जाती है।
- वर्षा के बाद के आठ महीनों में नदी में पानी पर्याप्त मात्रा में न रहने के कारण गंदगी को घोलने की क्षमता घट जाती है जिससे प्रदूषकों की सांद्रता ज्यादा हो जाती है।
- 'नेचर्स साइंटिफिक रिपोर्ट्स' में प्रकाशित विश्लेषण के अनुसार गंगा नदी में गर्मियों के मौसम में पानी का बहाव काफी कम हो जाता है और अनुमानों के मुताबिक

आने वाले कुछेक वर्षों में मानसून को छोड़कर शेष महीनों में गंगा नदी में वाराणसी से कोलकाता के बीच पानी का प्रवाह बेहद कम रह जाएगा।

- इस अध्ययन से यह संकेत भी मिलता है कि नदी का भूमिगत जल बड़ी मात्रा में निकाले जाने के कारण 1970 के दशक के बाद से नदी के भूमिगत जल की मात्रा बचकर 50 प्रतिशत ही रह गई है। आगामी तीन दशकों में यह और भी घटकर 1970 के दशक की तुलना में 75 प्रतिशत कम हो जाएगी जिससे सीवेज और अन्य कचरे और गंदगी के पानी में न घुल पाने के कारण प्रदूषण का स्तर भी बेहद ज्यादा हो जाएगा।
- यदि नदी तट के 2-3 किलोमीटर क्षेत्र में भूमिगत जल की निकासी की गतिविधियों पर तुरंत प्रभावी अंकुश न लगाया गया तो आने वाले दशकों में नदी के कई भाग लुप्त हो जाएंगे। इससे गंगा नदी तथा उन शहरों की इकोलॉजी पर गहरा प्रभाव पड़ेगा जो सिंचाई, पेयजल और औद्योगिक कार्यों के लिए गंगा पर निर्भर हैं।

गंगा पुनरुद्धार के लिए क्या किया जाना चाहिए?

- गंगा नदी का पुनरुद्धार वाकई अत्यन्त दुष्कर है क्योंकि इसका सामाजिक-आर्थिक और सांस्कृतिक महत्व बहुत ज्यादा है और इसका दोहन भी लगातार हो रहा है।

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

- इस व्यापक और बहुआयामी प्रयास को पहले कभी विश्व-स्तर पर नहीं चलाया गया जबकि सफलता पाने के लिए विभिन्न क्षेत्रों के बीच निकट सामंजस्य और सहयोग जरूरी है और हर संबद्ध व्यक्ति को इसमें शामिल करना आवश्यक है।
- गंगा जैसी विशाल नदी को, जिसके आसपास इतनी घनी आबादी रहती है, साफ करने के लिए बड़ी धनराशि उपलब्ध होनी चाहिए और सरकार ने इसका बजट काफी बढ़ा दिया है लेकिन यह अब भी पर्याप्त नहीं रहेगा। क्लीन गंगा फंड स्थापित करने का उद्देश्य यही है कि लोगों और संगठनों को इस कार्य से जोड़ा जाए ताकि वे भी इसमें आर्थिक योगदान करें।
- इस तथ्य की भी अक्सर अनदेखी कर दी जाती है कि घरेलू कचरे और अपशिष्ट जल का समुचित निपटान न होने से जलमार्गों का प्रदूषण बढ़ता ही है।
- यद्यपि सरकार का मुख्य जोर सीवरेज इंफ्रास्ट्रक्चर तैयार करने पर है परंतु नागरिकों और खासकर नदी क्षेत्र में रहने वालों का दायित्व है कि वे पानी की खपत पूरी किफायत से करें और कोशिश करें कि कचरा भी कम से कम निकले। पानी को कुशलतापूर्वक फिर से इस्तेमाल करने और उसे री-साइकिल करने पर विशेष ध्यान देना तथा जैविक कचरे और प्लास्टिक को रीसाइकिल करके नदी के पुनरुद्धार के प्रयासों पर कम बोझ पड़ेगा।